मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

बारहवें वार्षिक सरोजिनी नायडू मेमोरियल लेक्चर में कोलोनियल गवर्नेंस और लेबर जेंडर संबंधी पहलुओं की पड़ताल की गई

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने गुरुवार, 12 फरवरी, 2026 को मीर अनीस हॉल (गेट 15), जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में दोपहर 2:30 बजे XII वार्षिक सरोजिनी नायडू मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया। 'मेरा बदन, मेरा अर्ज़ी: जेंडर, लेबर, गवर्नेंस इन कोलोनियल इंडिया' टाइटल वाले इस लेक्चर में यूनिवर्सिटी ऑफ़ वर्जीनिया की जानी-मानी स्कॉलर प्रोफेसर गीता पटेल ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम को SNCWS की डॉ. अमीना हुसैन और डॉ. अदफर राशिद शाह ने समन्वित किया। लेक्चर में फेमिनिस्ट हिस्टोरिकल नज़रिए से बॉडी ऑटोनॉमी, इकोनॉमिक एजेंसी और कोलोनियल स्टेट पावर के मेल पर नई जानकारी दी गई।

डॉ. अमीना हुसैन ने अपनी शुरुआती बातों में, खास लोगों का स्वागत किया और स्पीकर का परिचय कराया। उन्होंने प्रोफेसर पटेल के फेमिनिस्ट हिस्टोरियोग्राफी और इंटरडिसिप्लिनरी स्कॉलरशिप में अहम योगदान पर रोशनी डाली। फिर प्रोफेसर निशात ज़ैदी ने इस वर्ष के मेमोरियल लेक्चर थीम की प्रासंगिकता और अहमियत पर ज़ोर देते हुए, स्पीकर को पोडियम पर आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि कोलोनियल पिटीशन पर प्रोफेसर पटेल का काम उस तरह की कड़ी, राजनीतिक रूप से जुड़ी स्कॉलरशिप का उदाहरण है जो सरोजिनी नायडू की विरासत को एक स्वतंत्रता सेनानी और महिलाओं के अधिकारों की हिमायती, दोनों के तौर पर सम्मान देती है। प्रोफेसर ज़ैदी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे यह लेक्चर जेंडर पावर के बारे में ज़रूरी बातचीत के लिए सेंटर के कमिटमेंट को जारी रखता है और हमें हाशिये पर खड़ी महिलाओं के अनुभवों के ज़रिए कोलोनियल इतिहास पर फिर से सोचने की चुनौती देता है।

लेक्चर का दिल को छू लेने वाला टाइटल, जिसका मतलब है 'माई बॉडी, माई पिटीशन', इस बात पर ज़ोरदार सवाल उठाता है कि कैसे कोलोनियल लोग, खासकर महिलाएं, अपने शरीर को शोषण और विरोध दोनों की जगह मानती थीं। प्रोफेसर पटेल ने जांच की कि कैसे कॉलोनियल पीरियड के दौरान भारतीय महिलाओं द्वारा फाइल की गई पिटीशन (अर्ज़ी) ने लेबर एक्सप्लॉइटेशन, सेक्शुअल वायलेंस और दमनकारी गवर्नेंस स्ट्रक्चर के अंदर स्ट्रेटेजिक एजेंसी की कॉम्प्लेक्स कहानियों को उजागर करता है।

प्रोफेसर पटेल ने तर्क दिया कि कॉलोनियल राज के तहत महिलाओं की एजेंसी को समझने के लिए अर्ज़ी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सोर्स के रूप में काम करती थी। महिला वर्कर्स, घरेलू मजदूरों और सेक्शुअल वायलेंस सर्वाइवर्स द्वारा फाइल की गई कॉलोनियल पिटीशन ने महिलाओं की आवाज़ के दुर्लभ डॉक्यूमेंट्री सबूत पेश किए। इन टेक्स्ट्स ने दिखाया कि कैसे महिलाओं ने स्ट्रेटेजिक रूप से कॉलोनियल लीगल सिस्टम को संभाला, प्रॉपर्टी राइट्स का दावा किया, लेबर एक्सप्लॉइटेशन को चुनौती दी और बॉडी ऑटोनॉमी को बताया। महिलाओं ने अपने फायदे के लिए कॉलोनियल कैटेगरी को तोड़ते हुए ऑफिशियल ब्यूरोक्रेटिक भाषा और फ्रेमवर्क का इस्तेमाल किया।

लेक्चर में यह पता लगाया गया कि कैसे इन पिटीशन ने महिलाओं की मोबिलिटी, सेक्शुअलिटी और इकोनॉमिक पार्टिसिपेशन को कंट्रोल करने के बारे में कॉलोनियल स्टेट की चिंताओं को उजागर किया। साथ ही, डॉक्यूमेंट्स ने ब्यूरोक्रेटिक पावर के बारे में महिलाओं की सोफिस्टिकेटेड समझ और रिड्रेस के लिए ऑफिशियल चैनलों के उनके स्ट्रेटेजिक डिप्लॉयमेंट को भी दिखाया। प्रोफेसर पटेल ने दिखाया कि जिसे कॉलोनियल एडमिनिस्ट्रेटर रूटीन पेपरवर्क कहकर खारिज कर देते थे, वह असल में उन महिलाओं की पर्सनैलिटी की गहरी बातें थीं जिन्हें पूरी कानूनी पहचान नहीं मिली थी।

लेक्चर का मेन हिस्सा यह तर्क था कि शरीर कभी भी सिर्फ़ बायोलॉजिकल चीज़ें नहीं थे, बल्कि हमेशा पॉलिटिकल जगहें थीं। पिटीशन के टेक्स्ट में दिखाया गया कि कैसे महिलाओं के शरीर विवादित इलाका बन गए

जहाँ कॉलोनियल गवर्नेंस, कैपिटलिस्ट लेबर सिस्टम और पेट्रियार्कल कंट्रोल एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। जेंडर, लेबर और गवर्नेंस को, जिसे प्रोफेसर पटेल ने मिलीभगत वाली पहेलियाँ कहा, एक साथ लाकर, लेक्चर ने एनालिटिकल टूल्स दिए जो न सिर्फ़ कॉलोनियल इतिहास बल्कि बॉडी ऑटोनॉमी और लेबर राइट्स के लिए आज के संघर्षों पर भी रोशनी डालते हैं।

प्रोफेसर गीता पटेल एक जानी-मानी स्कॉलर हैं जिनकी रिसर्च जेंडर स्टडीज़, पॉलिटिकल इकॉनमी और कल्चरल एनालिसिस को एक साथ लाती है। उनका काम उन चीज़ों की जाँच करता है जिन्हें वह मिलीभगत वाली पहेलियाँ कहती हैं, यह जाँच करके कि जेंडर, नेशन, सेक्सुअलिटी, फाइनेंस, साइंस, मीडिया, कैपिटल और एस्थेटिक्स कैसे अनएक्सपेक्टेड तरीकों से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। वह खास तौर पर अपने इनोवेटिव मेथोडोलॉजिकल अप्रोच के लिए जानी जाती हैं जो नेशनलिज़्म, सेक्सुअलिटी, फाइनेंशियलाइज़ेशन और सिनेमा की जाँच करने के लिए साइंस पर अनएक्सपेक्टेड तरीकों से ध्यान देती हैं। उनकी स्कॉलरशिप पारंपरिक डिसिप्लिनरी सीमाओं को चुनौती देती है, और इस पर नए नज़रिए देती है कि कैसे कॉलोनियल गवर्नेंस स्ट्रक्चर ने जेंडर आधारित निकायों और लेबर सिस्टम को आकार दिया और उनसे आकार लिया।

इस कार्यक्रम को यूनिवर्सिटी लीडरशिप से मज़बूत इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट मिला। वाइस चांसलर प्रोफेसर मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रोफेसर मोहम्मद मेहताब आलम रिज़वी, चीफ पैट्रन और पैट्रन थे, जिन्होंने फेमिनिस्ट स्कॉलरशिप और क्रिटिकल हिस्टोरिकल इंक्वायरी को आगे बढ़ाने के लिए इंस्टीट्यूशनल कमिटमेंट पर ज़ोर दिया।

SNCWS के मानद निदेशक प्रोफेसर निशात ज़ैदी ने लेक्चर के महत्व पर ज़ोर दिया। इस मेमोरियल लेक्चर ने जेंडर पावर के बारे में क्रिटिकल बातचीत जारी रखकर, एक फ्रीडम फाइटर और महिलाओं के अधिकारों की एडवोकेट, दोनों के तौर पर सरोजिनी नायडू की विरासत को सम्मान दिया। प्रोफेसर पटेल के इंटरडिसिप्लिनरी अप्रोच ने उस तरह की स्कॉलरशिप को पूरी तरह से दिखाया जो हमें मार्जिनलाइज़्ड महिलाओं के अनुभवों के ज़रिए कॉलोनियल इतिहास पर फिर से सोचने की चुनौती देती है।
वार्षिक मेमोरियल लेक्चर सीरीज़ सरोजिनी नायडू, कवि, स्वतंत्रता कार्यकर्ता और किसी भारतीय राज्य की पहली महिला गवर्नर की कई तरह की विरासत को सम्मान देती है। नायडू ने खुद नेशनलिज़्म, जेंडर पॉलिटिक्स और सोशल रिफॉर्म के बीच उन मुश्किल बातचीत को दिखाया, जिनकी जांच प्रोफेसर पटेल के काम ने की। इस साल का लेक्चर खास तौर पर सही समय पर आया क्योंकि यह महिलाओं के लेबर राइट्स, बॉडी ऑटोनॉमी और पोस्ट-कोलोनियल इंडिया में कोलोनियल गवर्नेंस स्ट्रक्चर की लगातार चली आ रही विरासतों के बारे में आजकल की बहसों से जुड़ा था।

सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र, अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है, और इसने भारत में जेंडर स्टडीज़ रिसर्च और एक्टिविज़्म के लिए खुद को एक प्रमुख इंस्टीट्यूशन के तौर पर स्थापित किया है। सालाना मेमोरियल लेक्चर सीरीज़ ने लगातार दुनिया भर के जाने-माने स्कॉलर्स को जेंडर, पॉलिटिक्स और सोशल जस्टिस के मेल से जुड़े ज़रूरी मुद्दों पर बात करने के लिए एक साथ लाया है।

लेक्चर एक प्रश्नोत्तर सत्र के साथ खत्म हुआ और इसमें जामिया मिल्लिया इस्लामिया की सभी फैकल्टी के स्टूडेंट्स, रिसर्चर्स और फैकल्टी ने हिस्सा लिया।

धन्यवाद ज्ञापन मेमोरियल लेक्चर के समन्वयकों में से एक, डॉ. अदफर राशिद शाह ने दिया।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी